शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 14 | उदयपुर मंगलवार 15 अगस्त 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भारत छोड़ो से भारत जोड़ो तक

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

विश्व-देशों में हमारा देश सबसे अनूठा और अलौकिक है। यह ठीक ही कहा गया-'सारे जहां से अच्छा हिन्दुसतां हमारा, हमारा, हमारा।' इस पंक्ति में 'हमारा' शब्द तीन बार उच्चरित हुआ है। इसी में हमारी स्वतंत्रता का बोध परिलक्षित है।

यह देश लोकवाची, समूहवाची देश है। यहां का हर व्यक्ति एक परिवार है। कुटुम्ब है। यहां की महिला और पुरुष नितांत अकेला और एक नहीं, पचासों सम्बोधनों का सुरंगा दायित्व लिए सुखी तथा समृद्ध है। पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनस्पति तथा त्रय काय वाले थल जल एवं नभ में विचरण करते सभी 84 लाख जीवों के साथ हमारी मैत्री है। जाने-अनजाने में मन-वचन-काया से उनके प्रति कोई दुराभाव भी हो गया होता है तो उनसे क्षमा याचना कर यहां का प्राणी अपने को पुण्यजीवी मानकर प्रसन्न होता है। पूरी दुनिया को अपना कुटुम्ब 'वसुधैव कुटुम्बकम्' मानने वाला देश हमारा और हमारा ही है और यही हमारी स्वतंत्रता, स्वाधीनता एवं मनचीती मनस्विता है।

इसी देश के चेतन-अवचेतन में धर्म तथा अध्यात्म की पुरातनता लिए 'निज पर शासन फिर अनुशासन' की अधुनातनता का खण्ड-खण्ड अखण्ड प्रकाश दीप्त-प्रदीप्त है। पढ़ाई के दौरान छोटी कक्षाओं में ही 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर रहेंगे' के जोश ने हमारी भुजाओं में बल और भाल पर तेजस्विता भर दी थी। स्वतंत्र होने पर चौथी से सीधे छठी कक्षा में पहुंचकर जो गर्वानुभूति मुझे हुई वह मन-मयूरी बन गई थी। फिर प्रभातफेरियों में 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा' तथा प्राण मित्रों भले ही गंवाना, पर न यह झंडा नीचे झुकाना। का गौरव गान हमारी फड़कन को उड़नपंखी बनाता रहा। स्कूल में शनिवार को साप्ताहिक सभा में एक छात्रा भारतमाता बन जाती। दूसरे छात्र आजादी के तरानों वाली विविध काव्य-गीतिकाओं की जोश भरे शब्दों हुंकार करते। यथा -

यश वैभव की चाह नहीं / परवाह नहीं जीवन न रहे।
यदि अच्छा है तो यह है / जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।।

ऐसे ही कुछ प्रयोग हमने भारतीय लोककला मंडल में किये थे। अपने कलाकारों द्वारा राजस्थानी ख्याल की तर्ज पर मेरे द्वारा रचित इस नृत्यनाटिका ने सैकड़ों प्रदर्शन दिये। तीन दृश्यों की यह नाटिका 'आजादी रो उजास' नाम से लिखी गई। पहले दृश्य में भारतमाता जेल में बंदी है। दो पंच अंग्रेजों को भगाने की जुगत सोचते हैं। दूसरे दृश्य में भारतमाता तथा अंग्रेजों की बातचीत, गांधीजी द्वारा आजादी प्राप्त करना तथा तीसरे दृश्य में पंचायती राज का महत्व दिखाया गया है।

इसी तरह पड़-शैली में चित्रात्मक 'नृत्यपड़ी' की रचना की। इसके लिए मोटे कागज पर कलेण्डरनुमा चित्र बनाये गये जिन्हें एक लकड़ी के सहारे संयोजित किया गया। कलाकार और उसका सहयोगी जमुरा नृत्यमय ठुमका भरते एक-एक चित्र दिखाते अनुरंजनपरक गायकी प्रस्तुत करता है जिसमें आजादी के नव उल्लास की कथा है। टेर है- अरे ओ गांवां रा रेवाळ, आवो थांने कथा सुणावां, सुणो लगाकर कान.....।

हमारे पुस्तकीय पाठों में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की-

'जय-जय भारतमाता
तेरा बाहर भी घर जैसा, रहा प्यार ही पाता।'

और माखनलाल चुतुर्वेदी की 'एक फूल की चाह' -

'मुझे तोड़ लेना वनमाली / उस पथ पर देना तुम फैंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने / जिस पथ जावें वीर अनेक।।'

कविता ने स्वतंत्रता का माहात्म्य हमारे अन्तस में गहरा जड़ दिया था। बड़े होने पर हमारी समझ और सोच की आंख-पांख ने विस्तार पकड़ा। महात्मा गांधी की एकनिष्ठ स्वातंत्र्योत्तर चेतना को प्रेरित करते फिल्मी गीत-

'देदी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।।'

का स्वर लेकर करोड़ों भारतीय 'चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर' ले हमसफर हो गए। लाल किले पर पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा तिरंगे को सलामी देते 'जय हिन्द' और राष्ट्रगान 'जण गण मण' से अपने गांव के कण-कण में आजादी का यशस्वी पौरूष अंकुरित होते देखा। नाथूराम गोडसे द्वारा गांधीजी की हत्या होने पर पूरा गांव शोकमग्न हो गया। भाई साहब ने अपना नाथूलाल नाम बदलकर नरेन्द्र कर दिया। उनके कहने पर मेरा नाम भी मिठूलाल से महेन्द्र हो गया। गांववालों की जबान पर यह नाम दुरूह होकर नाथू-मिठू ही चलते रहे। यही नहीं बड़ी बहिन जीजां (93) तो आज भी नाथू-मिठू ही कहती है।

कवि-मंचों पर -

'स्वतंत्रता का मतलब नहीं कि बेकारी कंगाली बढ़े।
स्वतंत्रता का मतलब नहीं कि भूखमरी बर्बादी बढ़े।।'

की दहाड़ देश के मिजाज का दर्पण दिखाती रहीं। इस बीच कविवर रामधारीसिंह 'दिनकर' की हुंकार देती 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' ललकार में जयप्रकाश नारायण के ओजस्वी आंदोलन पर देश ओजस्वी आंदोलन पर देश को समग्र परिवर्तन की अंगड़ाई लेते देखा। वह दौर आजादी के पूर्व का था जब नारा था- 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और आज आजादी के सित्तर वर्ष बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लालकिले की प्राचीर से कहा- 'हम सबको मिलकर भारत छोड़ो की जगह भारत जोड़ो का स्वर बुलंद करना होगा।'

आजादी के बाद कई आंधियां-व्याधियां आईं मगर स्वतंत्रता का भारत तंत्र अपनी निरन्तरता में लोकतंत्र का सबल संबल बना 'सारे जहां से अच्छा' बनने की दिशा में लाट ललाट ही बना हुआ है।

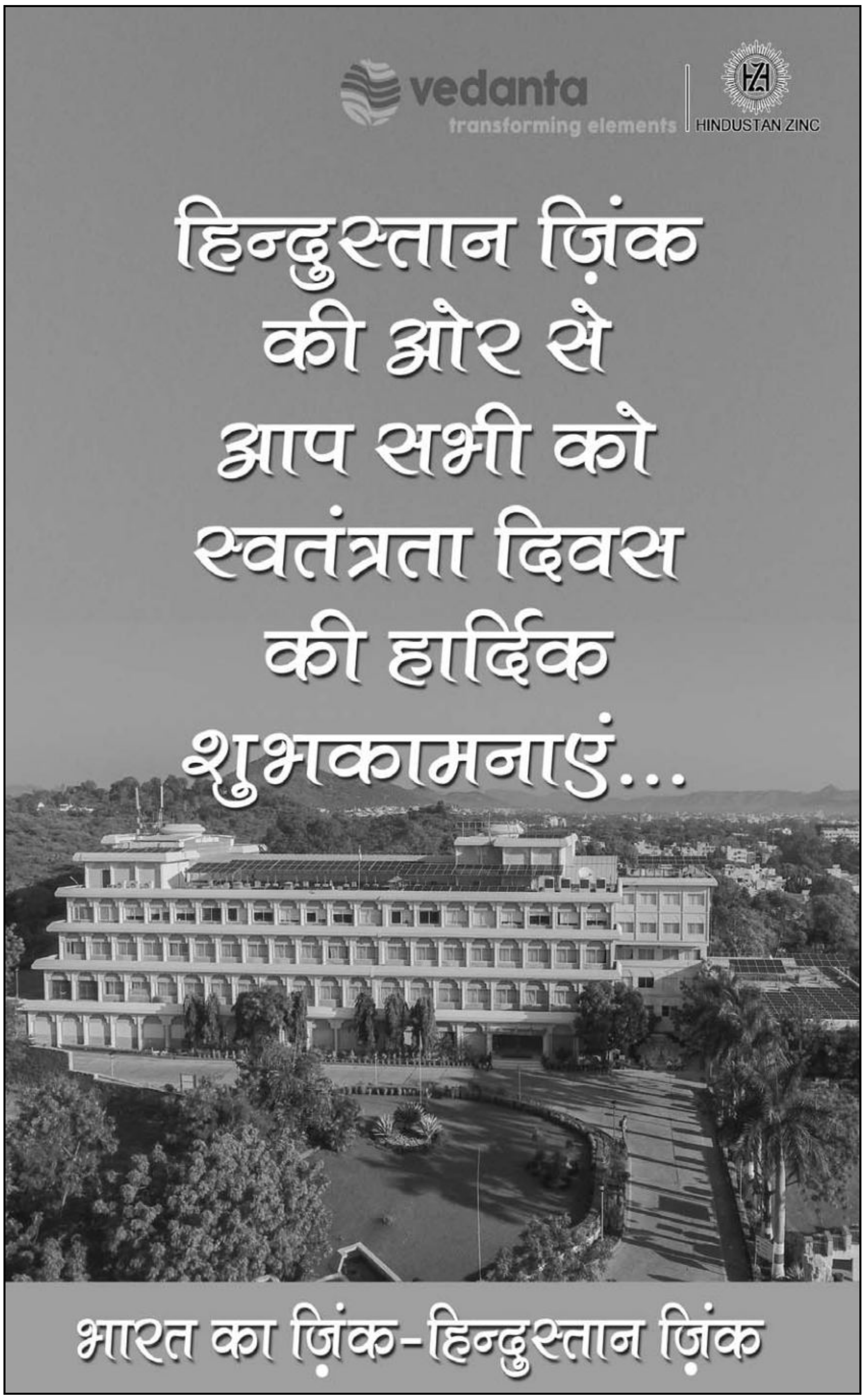

‘जैन लोक का पारदर्शी मन’ पुस्तक का लोकार्पण

उदयपुर। लोकसाहित्य मर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा लिखित ‘जैन लोक का पारदर्शी मन’ पुस्तक का नाइयों की तलाई स्थित तेरापंथ भवन में वरिष्ठ कवि-लेखक शासनश्री मुनि सुखलाल द्वारा लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर मुनिश्री सुखलाल ने कहा कि डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा लिखित ‘जैन लोक का पारदर्शी मन’ पुस्तक में जैन समाज में प्रचलित लोककलाओं का एक विहंगम चित्रण है। प्राचीनकाल में साधु-साध्वियां गांवों में विचरते थे तब उनके संपर्क को जीवंत रखने के कारण अनेक स्तरों पर महिला-पुरुषों द्वारा साहित्य का सृजन होता रहा जो समूहबद्ध रूप में सर्वत्र कंठ-दर-कंठ गायकी और समधुर कथन का सबब बना।

वह साहित्य अभी भी गांवों में प्राणवंत बना हुआ है। लोककलाओं के मर्मज्ञ और विद्वान डॉ. भानावत ने जैनधर्म से जुड़े होने के कारण इसे सार्थक रूप दिया है। उन्होंने साम्प्रदायिक आग्रहों से मुक्त होकर अपने लेखन द्वारा उस साहित्य को सब लोगों के लिए पठनीय बनाया है। इससे अन्य लोगों को भी अपनी सांस्कृतिक प्रभुता से जुड़ने का मौका मिलेगा, ऐसा विश्वास है।

मुनिश्री मोहजीतकुमार ने कहा कि इस पुस्तक से धर्मस्थानों में प्रचलित लोकसाहित्य के संरक्षण के साथ ही विद्वानों को इस क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिलेगा।

डॉ. देव कोठारी ने कहा कि जैन इतिहास-साहित्य को दिग्दर्शित करती लोकदृष्टि की तथ्यात्मक जानकारी देने वाली यह पहली पुस्तक है। जिन विधाओं पर डॉ. भानावत ने ध्यान आकृष्ट किया है उससे जैन विद्वान भी अब तक अपरिचित रहे हैं। कर्म-फल को दर्शाता मुख-पृष्ठ का ज्ञान चौपड़ से संबोधित सांप-सीढ़ी वाला प्राचीन चित्र बड़ा ही मोहक है।

लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि गद्य और पद्य रूप में साहित्य की अनेक विधाओं में इस साहित्य का प्रचलन मुख्यत: महिला समुदायों में है जो उनके जीवनधर्म की समृद्ध प्रशस्ति बना हुआ है। पिछले बीस-तीस वर्षों से मैंने इसका संग्रह, अध्ययन एवं अन्वेषण कर इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है।

हैदराबाद में गोइन्का पुरस्कार समारोह

शनिवार 5 अगस्त को हैदराबाद में कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा आयोजित समारोह में तेलगु भाषी हिन्दी साहित्यकारों एवं हिन्दी पत्रकारों को सम्मानित किया गया। अध्यक्षता डॉ. शुभदा वांजपे ने की। समारोह में डॉ. टी. मोहनसिंह को उनके साहित्यिक योगदान के लिए ‘भाभाश्री रमादेवी गोइन्का हिन्दी साहित्य सम्मान’, श्रीमती पारनन्दि निर्मला को ‘गीतादेवी गोइन्का हिन्दी-तेलगु अनुवाद पुरस्कार’ तथा हैदराबाद से प्रकाशित ‘हिन्दी मिलाप’ की कर्मठ पत्रकार श्रीमती कुमुद जैन को ‘श्रीमुनीन्द्र पत्रकारिता’ सम्मान प्रदान किया गया।

अध्यक्ष डॉ. शुभदा वांजपे ने कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा हिन्दी साहित्य के प्रति किये जा रहे कार्यों की भरपूर प्रशंसा की। फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों और पत्रकारों के योगदान की सराहना की और संस्था का परिचय दिया। इस अवसर पर प्रादेशिक पुरस्कार समिति के सदस्य डॉ. राधेश्याम शुक्ल, रवि श्रीवास्तव, वेणुगोपाल भट्टड, डॉ. एम. रंगय्या, अहिल्या मिश्रा, अनीता श्रीवास्तव एवं फाउण्डेशन की सहन्यासी श्रीमती ललिता गोइन्का सहित अनेक गणमान्य साहित्यप्रेमी मौजूद थे। आभार ओमप्रकाश गोइन्का जबकि संचालन श्रीमती मीना मूठा ने किया।

स्मृतियों के शिखर (36) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कालाकांकर के सुरेशसिंह

कालाकांकर के राजपुरूष सुरेशसिंह से मेरा पत्राचार संभवत: रंगायन को लेकर हुआ। भारतीय लोक कलामंडल से प्रकाशित ‘रंगायन’ का उल्लेख उन्होंने अपने पत्रों में बार-बार किया। जब मैंने पीछोला पाक्षिक प्रारंभ किया तो उसे भी भेजता रहा। अपने कुछ प्रकाशन भी भेजे। उन्होंने भी मुझे अपने प्रकाशन भेजे, खासकर यादों के झरोखे। उनके लिखे मेरे पास बारह पत्र हैं। ये सन् 1979 से लेकर 1987 के मध्य के हैं।

सुरेशसिंह साहित्य रसज्ञ और संस्कृतिचेता थे। कलामंडल के कार्यों के वे प्रशंसक थे। जो भी लेखादि उन्हें ठीक लगते, वे तत्काल अपने विचारों से अवगत कराते और यह महसूस करते कि कलामंडल जैसे संस्थान प्रत्येक प्रांत में हों ताकि वहां की पुरातन संस्कृति को ठीक से संरक्षित, संयोजित किया जा सके।

एक पत्र में उन्होंने लिखा- ‘‘रंगायन नियमित रूप से मिलता है। पढ़कर बड़ी प्रसन्नता होती है साथ ही यह दुख भी हो रहा है कि हमारे प्रदेश में इस प्रकार की कोई ऐसी संस्था नहीं है जो लोकगीतों तथा जनमानस की वास्तविक तस्वीर हमारे नवयुवकों के दे सके। आपके इस दिशा में इतने महत्वपूर्ण कार्य के लिए हम सब आपके आभारी हैं।’’

(20 दिसम्बर 1982 के पत्र से)

कुछ ऐसी ही पीड़ा उन्होंने अपने 26 मार्च 1981 को लिखे पत्र में व्यक्त की। लिखा- ‘‘रंगायन का फरवरी का अंक मिला। राजस्थानी लोकमंच की प्रवृत्तियां शीर्षक आपका लेख बहुत सुन्दर है। उससे राजस्थान के लोकजीवन की बहुत सी जानकारी सहज में ही प्राप्त हुई। हम लोग अपनी प्राचीन संस्कृति को एकदम भूलते जा रहे हैं। काश, हमारे प्रदेश में भी ऐसी कोई संस्था होती जो यहां की लोककलाओं पर कुछ कम करती। स्व. रामनरेशजी त्रिपाठी ने बड़ा परिश्रम करके लोकगीतों का संकलन किया था लेकिन वे अकेले कितना करते फिर भी उन्होंने जितना कार्य किया वह भुलाया नहीं जा सकता।’’

सुरेशसिंह आंखों की तकलीफ से काफी परेशान रहे। डाक्टरों ने उनको पढ़ने-लिखने से मना कर रखा था फिर भी वे पत्रों का उत्तर देने में चूक नहीं करते। एक पत्र में उन्होंने लिखा-‘‘मेरी आंखों का दर्द वैसा ही है। थोड़ा भी लिखने-पढ़ने से दर्द होने लगता है।

गीचड़ भी काफी आता है। डाक्टरों ने लिखने-पढ़ने पर प्रतिबंध लगा दिया है लेकिन यह मेरे मन की बात नहीं। मित्रों के पत्रों का उत्तर न देना भी उचित नहीं जान पड़ता फिर भी पढ़ना-लिखना कम कर दिया है।’’ इसी पत्र में उन्होंने लिखा- ‘‘जीवन में कभी भेंट होगी या नहीं, यह तो नहीं जानता लेकिन पत्रों द्वारा ही मिलते रहें, यही क्या कम है। इसी प्रकार स्नेह भाव रहे।’’

(1 दिसम्बर 1980 का पत्र)

सुरेशसिंहजी ने मुझे ‘यादों के झरोखे’ पुस्तक भेजी तो मैंने भी उन्हें कोई-कोई औरत, मेंहदी राचणी तथा मरवण मांडे मांडणा पुस्तक भेजी। इस पर उन्होंने 25 जनवरी 1981 को इन पुस्तकों की प्राप्ति का पत्र लिखा- ‘‘आपको मेरी पुस्तक पसंद आई, यह आपकी कृपा ही है। मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे देश की महान विभूतियों के चरणों के निकट बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आप जैसे सहृदय मित्रों से परिचित होने का मौका मिला।’’ पत्र के अंत में बड़े विनीत भावों से उन्होंने लिखा- ‘‘अंत में एक प्रार्थना है, इस अकिंचन के नाम के आगे श्रद्धेय आदि न लगावें। सुरेशसिंह काफी है।’’

पत्र के पीछे की ओर पुनश्च के अन्तर्गत सुरेशसिंहजी ने लिखा- ‘‘आपकी मेंहदी रचानेवाली पुस्तक मेरी भतीजी को इतनी पसंद आई कि वह एक झपट्टे में ही उसे ले भागी। रंगोली या अल्पना वाली पुस्तक (मरवण मांडे मांडणा) मेरी पत्नी प्रकाशवती को बेहद पसंद है। इसे उन्होंने संभाल कर रख छोड़ा है और आपको धन्यवाद तथा वन्दन लिखाया है।’’

भाई
सुरेश

सुरेशसिंहजी ने अपने यहां साहित्य की कई महान विभूतियों को आमंत्रित कर उनकी मेहमानवाजी की। सुमित्रानंदन पंत ने तो ग्रीष्म की चांदनी रात में वहां नौका विहार कर चांदनी रात में नौका विहार शीर्षक कविता लिखी। यह कविता वर्षों तक कॉलेजों में पढ़ाई जाती रही। मैंने भी इसे पढ़ी और बताया गया कि यह कविता विश्व-साहित्य की श्रेष्ठतम कविताओं में से एक है। इसके कारण रचनाकार पंतजी ही अमर नहीं हुए, कालाकांकर का राजभवन भी अमर हो गया। सुरेशसिंहजी ने यादों के झरोखे में पंतजी पर भी एक संस्मरण लिखा। जब मैंने उन्हें इस संस्मरण को लेकर पत्र लिखा तो उत्तर में उन्होंने 27 मई 1979 के पत्र में लिखा-

‘‘आपको स्व. पंतजी के संस्मरण पसंद आये, यह आपकी कृपा ही है। इसी बहाने आपसे परिचय हो गया। यह मेरा सौभाग्य है। ‘नक्षत्र’ वाले लेख में जिस नहान पर्व का वर्णन है वह मकर संक्रांति का नहान पर्व है। चूंकि कालाकांकर गंगा के तट पर बसा है, इससे यहां अमावस्या और पूर्णिमा को बाहर से काफी लोग गंगा-स्नान को आते हैं।

मकर संक्रांति के दिन तो हजारों की भीड़ हो जाती है।’’ चूंकि ‘नक्षत्र’ ऐसे स्थान पर है जिसके नीचे से कालाकांकर का प्रवेश द्वार है और उसी से होकर सड़क गंगा-घाट तक जाती है। इससे भी श्री पंतजी को ऊंचे टीले पर स्थित ‘नक्षत्र’ में बैठकर मेले की भीड़ देखने का अवसर मिलता था और उन्होंने उसी को देखकर ‘नहान’ वाली कविता लिखी थी। राजस्थान के सांगोद के नहान की तरह यहां कोई नहान पर्व नहीं होता।

आपका
सुरेशसिंह

सुरेशसिंहजी का एक पत्र मुझे लखनऊ से लिखा मिला जब उनकी पत्नी गंभीर रूप से बीमार होने के कारण वहां ले जाई गईं। सुरेशसिंहजी ने 17 कैसरबाग से 6 सितम्बर 1985 के पत्र में बड़े दुखी मन से मुझे सूचना दी- ‘‘मैं इधर बड़ी मुसीबत में पड़ गया था।

मेरी पत्नी प्रकाशवती गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गई थी। हम लोग बेहोशी की हालत में किसी प्रकार लखनऊ लाये जहां उनका ठीक से उपचार होने के कारण उनकी जान तो बच गई लेकिन वे बहुत कमजोर हो गई हैं। लगभग 5 महीने हो रहे हैं उनका इलाज होते, तब से मैं यहीं हूं। अभी लगभग दो महीने तो यहां रहना ही होगा।’’

इस पत्र के बाद लगभग दो वर्ष व्यतीत हो गये, मुझे सुरेशसिंहजी का कोई पत्र नहीं मिला। मैं यह समझ बैठा कि अब प्रकाशवतीजी धीरे-धीरे स्वस्थ हो रही होंगी और वे उनकी सेवासुश्रुषा में लगे होंगे लेकिन मैं दीवाली पर अवश्य कार्ड भेजता रहा। अचानक एकदिन मुझे उनका लिखा अन्तर्देशीय मिला। इस पत्र में पत्नी के निधन के कारण वे काफी अवसाद लिये थे और स्वयं भी जैसे जीवन को भार समझ बुझ जाना चाह रहे थे। उन्होंने लिखा-

परमप्रिय भाई कालाकांकर-229408
वंदन 29 अक्टूबर 1987

आपका भेजा हुआ दीपावली का कार्ड मिला। धन्यवाद। आपकी मुझ पर निरंतर कृपा और स्नेह रहा है। यह मेरा सौभाग्य ही है। भाई, आजकल मैं बहुत दुखी हूं। शायद आपको न मालूम हो 28 मई को मेरी जीवनसंगीनी प्रकाशवती का स्वर्गवास हो गया। दीपावली के ही दिन उनका जन्म हुआ था और दीपावली के ही दिन हम दोनों का विवाह भी। इसी कारण हम लोग इस उत्सव को बड़े धूमधाम से मनाते थे।

प्रकाश बहुत व्यस्त रहती थी कि कहीं मकान का कोई कोना दीपक के बिना न रह जावे। पर इस बार तो मेरे लिए सब सूना-सूना सा हो गया है। घर-घर में दीवाली थी, मेरे घर में अंधेरा। बहुत जी ऊबता है। जिनके साथ जीवन के 50-60 वर्ष बिताये थे और जो छाया की तरह मेरे साथ रहती थी उनका अचानक चला जाना बहुत खलता है। अब जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है। अब तो यही सोचता हूं कि जल्दी ही परमात्मा मुझे भी बुला ले। क्योंकि-

‘‘यूं जिन्दगी गुजार रहा हूं तेरे बगैर,
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूं मैं’’

और क्या लिखूं, कुछ लिखा नहीं जाता। क्षमा करें। आशा है, आप सानंद और प्रसन्न हैं। नववर्ष आपके लिए मंगलमय हो, यही कामना है।

शोकाकुल भाई
सुरेशसिंह

अपने छलकते आंसुओं में मैंने कई बार यह पत्र पढ़ा। सोच नहीं पाया कैसे उन्हें लिखूं ! क्या लिखूं ! वे वैसे ही घने अवसाद में हैं। पत्र पढ़कर न जाने कितना अवसाद उन्हें घेर लेगा।

'मसखरी' पर दो वरिष्ठ साहित्यकारों के पत्र

लिखकर मसखरी बेहद कठिन कार्य : रामगोपाल शर्मा

मसखरी करना बहुत कठिन कर्म है। मसखरी करने वालों को बहुत सोच-समझ कर शब्दों का चयन करना होता है। ये शब्द ऐसे वाण का रूप ले लेते हैं जो एकबार कमान से निकल जाने के बाद या तो हंसी का गुब्बारा बनकर सामने वाले की आंखों में चकाचौंध भरते हुए उसके ओठों पर फुस्स हो जाते हैं या यदि नुकीले बन पड़े तो दिल की गहराई में घुस कर वर्षों तक सालते रहते हैं।

यह तो हुई मौखिक मसखरी की बात, जिसमें एक सुविधा यह है कि यदि सामने वाले से सामना भी हो जाए तो आजकल के नेताओं की तरह शब्द झुठलाए भी जा सकते हैं। कहा जा सकता है कि मैंने ऐसा नहीं कहा था, ऐसा कहा था। प्रमाण क्या है जिस पर सामने वाला अड़े। अरे भाई आप तक जिसने मेरी बात पहुंचाई उसके कहने का ही यह फेर है। परन्तु जब लिखकर मसखरी की जाए तब क्या कीजिए। सचमुच यह बेहद कठिन कर्म है। इसमें बचने की कोई गुंजाइश नहीं है।

और यही कठिन बेहद कठिन कर्म डॉ. महेन्द्र भानावत गत 25 वर्षों से करते आ रहे हैं। शायद वे समझते रहे होंगे, अपने कठिन कर्म की गंभीरता को इसीलिए अब 25 वर्षों बाद 'मसखरी' का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता लेकर आंनद के दरबार में अपनी गुस्ताखियों का भेद खोलने हाजिर हुए हैं। पर देखिये तो उनकी गुस्ताखी की हद कि आनंद तो कलाकंद, वे स्वयं को भी लड्डू बनाने से नहीं हिचकिचाते।

हर बार होली का पर्व आते ही महेन्द्रजी का मसखरी-पिटारा खुल जाता है और छप जाता है अखबार के पन्ने पर। कितने तीर वे छोड़ते हैं एक साथ और सब के सब तीर सीधे निशाने पर लगते हैं। इन तीरों ने शायद ही कभी किसी को घायल किया हो। अलबत्ता किसी की दाढ़ी बढ़ा दी है तो किसी के ओठों को सदाबहार मुस्कान से मढ़ दिया है। उन्होंने यह कर्म कविता के माध्यम से किया है, यह गनीमत है। कहीं यही कर्म गद्य के माध्यम से किया होता तो लोग समझते कि साहित्य में भी अब नक्सलवादी आ गए हैं जो भावों की दुनिया छोड़ कर विचारों के जंगल की घास साफ करने लगे हैं।

अब जब पुस्तक रूप में 'मसखरी' को स्वतंत्रता के 25 वर्ष छप ही गए हैं जो इनके विमोचन का ही नहीं, 25 वर्ष पूरे होने का भी उत्सव मनाया जाना चाहिये लेकिन कौन करेगा यह कार्य? शायद राजस्थान साहित्य अकादमी अपने कर्तव्य की सीमाओं पर रोशनी डाले और तब तक मसखरी के जनक डॉ. महेन्द्र भानावत अकादमी की मसखरी रचते रहें। अस्तु।

-डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', नोएडा
15 अगस्त, 2010

92वें वर्ष के सुप्रभात पर मसखरी जैसे प्रभु-कृपा : राजेन्द्रशंकर

इससे अच्छी सौगात क्या हो सकती थी- मैं अपने 91वें वर्ष का अंतिम दिन पूरा कर रहा था और मेरे नये साल का पहला दिन आ रहा था, जब आपकी 'मसखरी' आयी-अत्यंत आनंदप्रद रहा। आपके अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूं। इसके पीछे कुछ तो प्रभु कृपा होगी। कहां बरसों से आपसे मिलना हुआ। फिर भी आपका यह मनमुदित करने वाला संकलन मुझे भी भेजने का मन हुआ। मुझे अभी भी प्रभु-कृपा प्राप्त है। इसका विश्वास मुझे हुआ।

शाम को 'मसखरी' मिली और सुबह तक मैं इसे आधी से अधिक पढ़ गया और इसकी 'याद बसी मन में' सदा रहेगी कि अपने नये साल का आरंभ आपके लिए लिखी इन पंक्तियों से कर रहा हूं। कुछ भी कहने से पहले मुझे इस संकलन के पृष्ठ 37 पर जिन तीन के बारे में कहा गया है- 'तुम बिन या नगर की सूख गई रसखान ;' उनकी याद आ रही है। इस संकलन में जिनकी रचनाएं समाविष्ट हैं उन 'मेवाड़ी शान' में से मैं इन्हें ही सबसे अधिक निकटता से जानता था।

यह केवल संयोग नहीं है। इन तीनों की आंतरिक शक्तियों का प्रभाव है कि जिन्हें आप सबने सबसे ज्यादा याद किया है, उनका अति अनुग्रह मुझे, इतनी दूर रहने वाले को भी, उतना ही प्राप्त रहा। आतुरजी उदयपुर-जयपुर में जब मिलते थे, आतुरता से मिलते थे। चन्द्रेशजी मेरे लिए दूज के चांद से थे जिनकी अभिलाषा सदा रहती है और नागरजी ने अपनी अमर रचना के, जिसका स्मरण इस संकलन में भी किया गया है, पृष्ठ-पर-पृष्ठ तब सुनाये थे जब उनके तन-मन से वह कागज के पृष्ठों पर आ रही थी। उनके सुनाये कुछ लम्हे मुझे याद आ रहे हैं जैसे- स्नेह बिन बाती न होती, भ्रष्ट हो जब आचरण, अंधे नयन हों, रोशनी देगी तो कैसे, उत्पीड़न के बेंस हो धंधे, लपक-झपक कभी लपकती है तो कभी झपकी लेता दिखाई देता है। इन तीनों के मेरे लिए और भी अनेक संस्मरण हैं और मैं मन से प्रसन्न हुआ इनके संबंध में पंक्तियां पढ़ कर।

प्रसन्नता प्रदान करने के लिए ही तो यह सारा 'मसखरी' का संकलन है। यह सचमुच 'जीवन रस की गोली' है। इसकी जो विशेषताएं प्रारंभिक पृष्ठों पर आई हैं उनका पूरा आभास मुझे ही इनके पारायण से हुआ है। कवियों को चाहे जितना 'स्वयं-भू' कहा गया हो, ये 'शानदार पुछल्ले' उन दिनों की प्रेरणा और योजना के हैं, जब सचमुच में बड़ी 'मसखरी' हुआ करती थी। आप इस पर पूरा अभिमान और अपार आनंद अनुभव कर सकते हैं कि इस 'एक उपलब्धि' को आपने आकार और अस्तित्व दिया है।

इसकी याद बसी मन में रहे सदा, यह मेरी भी कामना है। इन पंक्तियों को पढ़ते-पढ़ते इसकी छाप अपने आप बनती जाती है कि इनके सृजन में कितने वर्षों तक बाधा नहीं आई और किसी पंक्ति का आघात किसी को लगा तो भी उसने यही सोचा 'बुरा न मानो, बुरा न सोचो, बुरा न समझो ;' यह परम उदात्त देवी-भावना होती है, अभिनंदनीय।

यह इसी से संभव हुआ कि इन रचनाओं के साथ 'मंगल भावना है, तो दिलखुश बहार भी। कोई भावना इतने वर्षों दिलखुश रह ले, यह सचमुच मंगलकारी होता है।' आपने इसका आनंद अनुभव किया, तभी इसे बांटने की मनोकामना हुई है। आपको बधाई।

नंदजी ने जो लिखा, उसका प्रारंभिक पृष्ठ चौदह से प्रारंभ पेरा तो गद्य में होते हुए पद्य हो गया है। यही गद्य-पद्य दोनों में समान साधना की प्रतिभा होती है। वे अभिनंदनीय हैं। उन्होंने इस संकलन की 'सांस्कृतिक उन्मुक्ता' स्वीकार की है। माना है कि 'इन्हें छेड़खानी के लिए लिखा गया है।' फिर भी इसके बारे में कहा है- 'इन तुकबंदियों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी पुरुषार्थों का समाहार है।' नम्रता से उन्होंने कहा है- 'यह हमारी लोकहित की आराधना है।' इस पर प्रश्न-सा आता है कि 'लोकचित्त इन दिनों अनंग साधना के अनायास खुले द्वारों पर दस्तक देता है।' यह चाहे जितना अनायास लगे, भारतीय संस्कृति ने पहचाना था कि कुछ-कुछ उन्मुक्तता से ही सब पुरुषार्थ निभ सकते हैं। परन्तु काम और धर्म में संतुलन और सीमा निर्वहन सरल नहीं होता और आजकल इस ओर जो अति हो रही है वह भारतीय संस्कृति पर अतिक्रमण है। सीमा में सबकुछ संभव और उचित है। सीमा के बाहर कुछ भी उचित और सहनीय नहीं है। यह निर्धारण ही भारतीय परंपरा को ऐसा प्रतिष्ठित बनाये हुए है कि विदेशों में भी इसका सम्मान है।

नंदजी ने तो मदनोत्सव का उल्लेख भर किया है। जेम्स टॉड ने इसका विस्तार से वर्णन किया है। और सब जानते हैं कि कितना आदर उसके मन में मेवाड़ के लिए था। यह जो आदर का अभाव हो रहा है, उसकी चर्चा श्री गोपालकृष्ण गांधी ने भी अपने हाल के बयान में की है जिसका पूरा विवरण दैनिक अंग्रेजी 'हिन्दू' में आया है। आनंद और आदर का समन्वय हमारी परंपरा में रहा है और अब जो इसका ह्रास हो रहा है उसकी चिंता भी 'मसखरी' पढ़ो तो उठती है।

काम केलि की क्रियाओं का उन्मुक्त वर्णन गीतों में तो होता है। मूर्तियों में है। समाज में पूरी तरह यह होता है। इसका आभास 'मसखरी' में आया है परन्तु यह प्रश्न बनता जाता है कि जिस काम को धर्म के समकक्ष रखा गया है, वह पतन के प्रति प्रवर्त क्यों कैसे हुआ! यह देश की चारित्रिक गिरावट है और जिन्होंने होली का पुराना जमाना देखा है उन्हें दुख होता है कि उन्मुक्तता जितनी बंधन में आई है उतनी ही इसमें गंदगी आई है।

यह बात तो अभी बहुत दूरस्थ लगती है कि कमल कीचड़ में ही खिलता है, लेकिन 'मसखरी' पढ़कर आशा बनती है कि जो परंपरा 1980 से 2010 तक चली आ रही है उसमें अवश्य जीवन-तत्व है। जीवन-शक्ति है और वह मिट नहीं सकती। मेरी यह आस्था ही उन सबका आदर है जिनकी पंक्तियों का संयोजन आपने सामर्थ्य और सफलता से किया है। जो चित्र और चित्रण इसके साथ आए हैं, उन्होंने चांदनी को चमकाया है और मुद्रण की सुचारुता ने इसका स्तर उठाया है। सबको मेरी फिर-फिर बधाई। मेरी अपार कृतज्ञता इसके साथ है, और यह कामना 'रहिबो आनंद नित।'

- राजेन्द्रशंकर भट्ट, जयपुर
27, अगस्त 2010

साहित्यकार वेद व्यास की कृतियों का लोकार्पण

वरिष्ठ साहित्यकार वेद व्यास की 'शेष रहेंगे शब्द' तथा 'अब नहीं तो कब बोलोगे' कृतियों का लोकार्पण 30 जुलाई को जयपुर में हुआ। 'शेष रहेंगे शब्द' का चयन व प्रस्तुति श्याम महर्षि तथा 'अब नहीं तो कब बोलोगे' की डॉ. रमाकान्त शर्मा ने की। न्यायमूर्ति पानाचंद जैन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुए इस लोकार्पण समारोह में डॉ. वीणा अग्रवाल, राजाराम भादू, ओम नागर, डॉ. जयश्री शर्मा, श्रीमती अरुणा राय, पी.सी. त्रिवेदी, बी.एल. जोशी, रूपसिंह बारहट, बी.एल. शर्मा, महेश शर्मा जैसे ख्यातलब्ध न्यायाधिपति, कुलपति, पत्रकार तथा साहित्यमनीषियों ने समारोह को गौरवान्वित किया। कृतिकार वेद व्यास ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मैंने 1962 में 'राष्ट्रदूत' से पत्रकारिता की शुरूआत की। मेरे लेखक ने जहां स्वयत्तता महसूस की वहां मैंने लिखा। जीवन में समझौता नहीं किया। शब्द की विश्वसनीयता पर जोर रखा। संगठन के लिए मूल्यों की आस्था बनाये रख मैं सदैव पवन चक्की बना रहा जिसे हवा चलाती है। मैं तो हवा से बिजली बनाता हूँ। मंचस्थ अतिथियों ने कहा कि इस समय जाति-धर्म के नाम पर बांटने वाला समय चल रहा है और हम शब्दों के अर्थ बदलने से डरने लगे हैं। इसलिये मानवीय संवेदनाओं से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में वेद व्यास हमारे लिए मार्गदर्शी व प्रेरक हैं। लोकतंत्र को सही मायने में बचाने के लिए हमें खुलकर बोलने व लिखने की जरूरत है, चुप्पी तोड़ने की जरूरत है। समारोह का संचालन अविनाश व्यास ने किया। जीनगर दुर्गाशंकर गहलोत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कोमल वाधवानी सम्मानित

वरिष्ठ दिव्यांग कथाकार कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' एवं आशागंगा प्रमोद शिरढोणकर को उनकी साहित्यधर्मिता के लिए डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान से विभूषित किया गया। शिलांग में पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी एवं कहानी लेखन महाविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन में यह सम्मान अकादमी अध्यक्ष बिमल बजाज, महाविद्यालय निदेशक श्रीमती उर्मिकृष्ण तथा मुख्य अतिथि शंकरलाल गोयनका ने प्रदान किया।

जीवनराम मुंगीदेवी गोयनका ट्रस्ट के इस समारोह में सोलह राज्यों के सवा सौ साहित्यकारों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि आईपीआर के निदेशक मानस रंजन महापात्र थे। अकादमी सचिव अकेलाभाई ने शिविर के व्यवस्थापन का निर्वहन किया।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 अगस्त 2017

सम्पादकीय

निज पर शासन फिर अनुशासन

यह मनुष्य स्वभाव है कि वह सबसे पहले अन्यों को देखता है। उनकी हर हरकत को ध्यान में रखता है और आवश्यक अनावश्यक टिप्पणी करता है। इस आदत में कईबार टिप्पणीकार दुखी होता है। बेचैनी महसूस करता है। गुस्सा भी करता है पर सार कुछ नहीं निकलता कारण कि उससे उसका कोई जुड़ाव नहीं होता। अच्छा तो यह हो कि जिसमें वह अ-ठीक देख रहा है, उसे सावधानी से बताये कि उसमें यह चीज ठीक नहीं है पर यह साहस नहीं होता और अन्यों को वह सीख देने वाला भी कौन होता है।

यदि उसने हिम्मत कर कुछ कह भी दिया तो तत्काल यह सुनने को मिलेगा कि पहले अपना देखो। अपनी निपटो। फिर अन्यों की बात करो। यह तो वही बात हो गई जिससे कहावत बनी- 'कंडी मां मरै नै कंडे सपने आवै।'

आचार्य तुलसी ने इसी बात का गहराई से चिन्तन कर यह संदेश दिया - 'निज पर शासन फिर अनुशासन।' पहले व्यक्ति अपने स्वयं को देखे। स्वयं को सोचे फिर दूसरों को सीख दे। यदि व्यक्ति में स्वयं को देखने, सोचने की समझ आ गई तो वह अन्यों को कुछ कहने का विचार ही त्याग देगा। सब अपनी-अपनी भर कर पीने लग जायेंगे।

अन्तर के पट खोलने, अन्तर को देखने, अन्तर की तलाश करने की बात सभी करते हैं। सामान्य जन और विशिष्ट जन भी पर उसका पथ क्या है? अन्तर को पकड़ने, खोलने, तलाश करने की विद्या क्या है? शास्त्रों और ग्रंथों में भी आत्मानुशासित होने की बातें पढ़ने को मिलती हैं पर कोई ऐसा सुमार्ग नहीं कि उसे पकड़कर ठेठ तक पहुंचा जाय।

बहुत से व्यावहारिक चिन्तकों ने यह ठीक ही कहा कि अभ्यास से व्यक्ति स्वयं ही कोशिश करे तो उसे सफलता मिल सकती है। योग एक रास्ता बन सकता है जिसमें ध्यान के माध्यम से मन को वश में करने से सोच का भटकाव बंद हो सकता है। कुल मिलाकर मन ही है जो पकड़ने में नहीं आकर गलत-सलत रास्तों पर जाकर जकड़न-भटकन में उलझने को मजबूर करता है। ऐसा भी होता है जब गलत काम करने के लिए भीतर का आत्मतत्व हल्का सा इशारा देता है पर हमारे पर मन का प्रभाव बड़ी बुरी तरह हावी होने से हम संभल नहीं पाते हैं।

ऐसी परिस्थिति में कबीर की छाप का एक भजन बार-बार हमारा ध्यान आकृष्ट करता है जिसकी शीर्ष पंक्ति है- 'किस विध म्हैं समझाऊं रै मन तोहे किस विध म्हैं समझाऊं।'

पत्र-पिटारी

'स्वर सरिता' के जुलाई अंक में डॉ. कहानी भानावत का बाजोट्यो लेख पढ़ा। राजस्थान का बाजोट उत्तरभारत मध्यप्रदेश की चौकी है। जन्म-विवाह के सारे संस्कार इसी पर बिठाकर होते हैं। बहुत करके यह चन्दन की होती है। बहुत से लोकगीतों में जमाई राजा को चन्दन की चौकी पर बिठाकर दूध से पांव पखारने का सम्मान दिया जाता है।

चंदन चौकी बैठनो जी
एजी कोई दूध पखारूंगा पांव

विवाह में जमाई राजा पाहने जी द्वारचार रत्नजड़ित चौकी पर वर को बिठा कर ही होता है और वही चौकी दहेज में दी जाती है। मेरे विवाह की चौकी आज भी घर में मेरे सम्मान चिन्हों को संजोये रखी हुई है। कहानी के बाजोट के पायों की संख्या ने मेरे सृष्टि के युग्मराग की अवधारणा पुष्ट की है इसलिए भी लेख अच्छा लगा। चौक और चौकी हमारे सभी संस्कारों का युग्मराग है, इससे अधिक क्या कहा जाय।

- डॉ. मालती शर्मा

खोज-खबर

गवरी और भीखाभाई

वह 30 मई 1981 का दिन था। उदयपुर सूचना केन्द्र में भारतीय जनजातियों पर डाक टिकिट जारी किये जाने का एक समारोह आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता सांसद भीखाभाई ने की। उन्होंने कहा कि यदि मैं अनुसंधानकर्ता होता तो यह सिद्ध कर देता कि भील ही सर्वाधिक पौराणिक जाति है।

महाराणा प्रताप के साथ भीलों ने युद्ध में सर्वाधिक योग दिया। कई कस्बे-शहर यथा- प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा ऐसे हैं जो भीलों के नाम से बसे हुए हैं। इतना सबकुछ होते हुए भी यह पिछड़ी जाति है। वे पिछड़े इसलिए हैं कि उनके पास सरलता है। ईमानदारी है। सहिष्णुता है। चोरी-चपाटी नहीं है। भ्रष्टाचारी नहीं है। उन्होंने इस बात पर अफसोस प्रकट किया कि किसी मनुष्य की अच्छाइयां ही आज उसे पिछड़ा किये हुए हैं।

समारोह समाप्ति के बाद मैंने उनसे भेंट की और भीली-संस्कृति की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए उनसे पूछा कि स्वयं भील होने के कारण वे भीलों की कला-संस्कृति का अक्षुण्ण रखने के लिए क्या सोचते हैं?

1965-66 में जब मैं पीएच.डी. के शोधकार्य बाबत भीलों के गवरी नृत्य-नाट्य के अध्ययन के लिए कई जगह भटका तो यह सुनने में आया कि भीखाभाई चाहते हैं कि भील लोग नाचना-गाना बंद कर दें। ये ही चीजें ऐसी हैं जो उन्हें पिछड़ा किये हैं। कई जगह भील पंचायती हुई जिसमें गवरी बंद करने के निर्णय लिये गये। इस संबंधी परचे भी छापे गए जिनमें कहा गया कि यदि कोई गवरी लेगा तो उसे जाति से बाहर कर दिया जायेगा।

इस पर भीखाभाई थोड़े गंभीर हुए और बोले- 'परचों की मुझे कोई जानकारी नहीं है और न मैंने कोई परचा देखा ही है।' मैंने कहा- 'परचा मेरे पास है।' वे बोले- 'मगर मैं इस पक्ष में तो कतई नहीं हूं कि भील अपनी कला का प्रदर्शन दूसरों के लिए करें। दूसरों के सामने करें।' मैंने कहा- 'इस बात को थोड़ा स्पष्ट करिये। दूसरों के लिए से आपका क्या तात्पर्य है। गवरी कोई दूसरों के लिए थोड़ी की जाती है। वह तो गांव-दर-गांव चलती रहती है। गांव के अन्य लोग उसे तब भी देखते थे और आज भी देख रहे हैं। यही हाल भीलों के नृत्यों का है। अपने निजी त्यौहार-उत्सव एवं संस्कारों पर भील जो नृत्य-गीत की गंगा बहाते हैं उससे आपको क्या आपत्ति है? मेलों-ठेलों में पहले भी रात-रात भर ये लोग नाचते रहे हैं और आज भी नाचते हैं तो आपको ऐतराज क्यों?

फिर अब तो वैसे गांव भी नहीं रहे। सभी गांवों में नल, बीजली पहुंची, पहुंच रही है। स्कूल और अन्य दफ्तर खुल रहे हैं अतः बाहर के लोग उन गांवों में पहुंच रहे हैं और आप स्वयं अपने गांव से उठकर दिल्ली पहुंच गये हैं और राजस्थान में भी आपने वर्षों तक मंत्री पद से लेकर कई अन्य पद लिए हैं फिर आप भीलों को किस हद तक और कैसे सीमित रखना चाहते हैं और क्या इससे उनका विकास नहीं रूक जाएगा?

और यह भी कि यदि भील अपने नृत्य-गीत बंद कर देंगे तो दूसरे लोग उनके नाच-गान प्रस्तुत करने लग जायेंगे जैसे यह अभी नाच हुआ। (इसी समारोह के अन्त में भील-भीलनी का नृत्य-गीत प्रस्तुत हुआ जिसे देखते हुए हमारी बातचीत जारी रही।) इसी को यदि किसी भीलों द्वारा ही प्रस्तुत करवाया जाता तो कुछ अलग बात होती।'

भीखाभाई ने मेरी बातें बड़े धैर्य और गंभीरता से सुनीं। इतने में किसी सज्जन ने उनको कोई सन्देश दिया। उन्हें वहां से जल्दी जाना था। वे वहां से उठे और मेरे कंधे पर हाथ रख बोले- 'फिर इस सम्बन्ध में बैठकर विस्तार से बात करेंगे। भील लोग अपने लिए स्वान्तः सुखाय ही अपनी कला-संस्कृति की अभिव्यक्ति दें। दिल्ली जैसे बड़े नगरों में आयोजित समारोहों में उन्हें घसीट-घसीट कर ले जाया जाता है और जिस ढंग से उन्हें प्रस्तुत किया जाता है, मैं उसके खिलाफ हूं। आबू में प्रतिवर्ष आयोजित अरावली सुन्दरी प्रतियोगिता, जो भील युवतियों को लेकर की जाती है, मैं उसका भी सख्त विरोधी हूं।'

- म.भा.

पीआईएमएस में टोसिस सर्जरी की शुरूआत

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक युवक की सफल टोसिस सर्जरी की है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि मंदसौर निवासी 18 वर्षीय युवक दीपक की दांयी आंख की पुतली जन्मजात गिरी हुई थी। गत दिनों उसे पीआईएमएस हॉस्पिटल के नेत्र रोग विभाग में दिखाया गया। सारी जांचें देखने के बाद नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. रिशेंद्र सिंह व प्लास्टिक सर्जन विशेषज्ञ डॉ. एम.पी. अग्रवाल द्वारा मरीज की संयुक्त रूप से टोसिस सर्जरी की गई। सर्जरी के बाद अब मरीज की आंख की पुतली सामान्य स्थिति में आ गयी है। आशीष अग्रवाल ने बताया कि इस बीमारी में आंख की ऊपरी सतह की पुतली गिरी हुई रहती है जिससे दृश्य क्षमता प्रभावित होती है। कभी कभी तो आंख की पुतली के पूरा झुक जाने के कारण पूर्णतया दिखाई भी नहीं देता है।

शब्द रंजन की हार्दिक बधाई

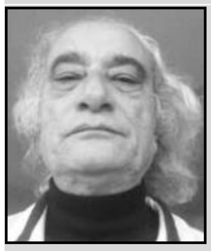

श्री रमेश व्यास पिछले दिनों दैनिक नवज्योति के स्थानीय संपादक बनाये गये। श्री व्यास का पत्रकारिता के क्षेत्र में दीर्घकालीन अनुभव रहा है। ये पूर्व में यहां राजस्थान पत्रिका तथा दैनिक भास्कर में भी बतौर संपादक अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

श्री सम्पत बापना नफा नुकसान के उदयपुर एरिया इन्चार्ज बनाये गये। ये पूर्व में भी इसी पत्र के स्थानीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त से दैनिक नफा नुकसान का प्रकाशन उदयपुर से प्रारंभ हो गया।

एचडीएफसी बैंक ने बचत बैंक खातों पर ब्याज दरें बदलीं

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने अपनी बचत खाते की ब्याज दरों में परिवर्तन की घोषणा की है जो 19 अगस्त से लागू होंगी। इस परिवर्तन के बाद 50 लाख रुपये या उससे ज्यादा राशि का बैंक बैलेंस बनाकर रखने वाले ग्राहकों को प्रति वर्ष 4 प्रतिशत का ब्याज मिलता रहेगा, लेकिन 50 लाख रुपये से कम का बैलेंस बनाकर रखने वाले ग्राहकों को 3.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष का ब्याज ही मिलेगा। ये नई दरें प्रवासी व गैरप्रवासी, दोनों नागरिकों के लिए लागू होंगी।

नारायण सेवा संस्थान में ध्वजारोहण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान परिसर में स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया गया। ध्वजारोहण संस्थान की सह संस्थापिका श्रीमती कमलादेवी अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम को अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल, डॉ. ए.एस. चुण्डावत, डॉ. बी.एल. शिन्दे तथा निदेशक वंदना अग्रवाल ने भी सम्बोधित किया। संचालन ओमपाल ने किया।

चिकित्सा क्षेत्र में नये आयामों का अवतरण : डॉ. अग्रवाल

उदयपुर। भीलों का बेदला स्थित पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल में पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के वाइस चॉसलर डॉ. डी.पी. अग्रवाल ने झण्डारोहण किया। उन्होंने कहा कि एक छोटे से अन्तराल में ही पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल ने चिकित्सा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किए हैं। इस मौके पर प्रिंसिपल एवं नियंत्रक डॉ. ए. पी. गुप्ता, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एम. सी. बसल, अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आर. के. सहित सभी विभागो के विभागाध्यक्ष, एमबीबीएस, डेन्टल एवं नर्सिंग के विधार्थियों की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही।

वोडाफोन ने पेश किया 348 रीचार्ज ऑफर

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने राजस्थान में अपने प्रीपेड उपभोक्ताओं के लिए विषेश ऑफर वोडाफोन 348 प्रीपेड रीचार्ज ऑफर का ऐलान किया है। इसके द्वारा उपभोक्ता 28 दिनों के लिए प्रतिदिन एक जीबी डेटा और अनलिमिटेड वॉइस कॉलिंग (लोकल और इंटरनेशनल) का लाभ उठा सकते हैं। यह ऑफर 4जी-3जी या 2जी इनेबल्ड हैण्डसेट का इस्तेमाल कर रहें सभी उपभोक्ताओं के लिये वोडाफोन के सभी स्टोर्स, मिनी स्टोर्स और मल्टी ब्राण्ड आउटलेट्स पर उपलब्ध है। वोडाफोन के उपभोक्ताओं के लिये माय वोडाफोन ऐप पर भी यह रीचार्ज उपलब्ध है।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि वोडाफोन हमेशा से अपने उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट सेवाओं का अनुभव प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक उत्पाद और सेवाएं लाता रहा है। वोडाफोन 348 प्रीपेड रीचार्ज ऑफर के साथ उपभोक्ता 28 दिनों तक रोज़ाना एक जीबी डेटा का फायदा उठा सकते हैं और वीडियो, म्युज़िक, लाईव टीवी और चैट का आनंद ले सकते हैं। इसके अलावा हमारे उपभोक्ता देश के किसी भी स्थान पर अपने प्रियजनों से लम्बी अनलिमिटेड बातें कर सकते हैं।

स्वतंत्रता दिवस पर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया द्वारा जिला स्तरीय सम्मान

दैनिक नवज्योति के अपराध संवाददाता भूपेश दधीच

ईटीवी राजस्थान के कैमरामेन जमाल खान

सूचना केन्द्र के सुनील व्यास

उदयपुर में स्वाधीनता दिवस पर ध्वजारोहण

गौरवशाली मेवाड़ का स्वर्णिम इतिहास : गृहमंत्री कटारिया

उदयपुर। गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि देश की स्वाधीनता, मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा के लिए समर्पण एवं बलिदान का यहां के वीर-वीरांगनाओं, रणबांकुरों का गौरवशाली इतिहास है। इसमें मेवाड़ की भूमि का इतिहास भी सुनहरे पन्नों में दर्ज है। वे महाराणा भूपाल स्टेडियम पर आयोजित 71वें स्वाधीनता दिवस समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर गृहमंत्री ने परेड का निरीक्षण कर मार्च पास्ट की सलामी ली और विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाओं एवं उपलब्धियों के लिए 60 प्रतिभाओं को प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

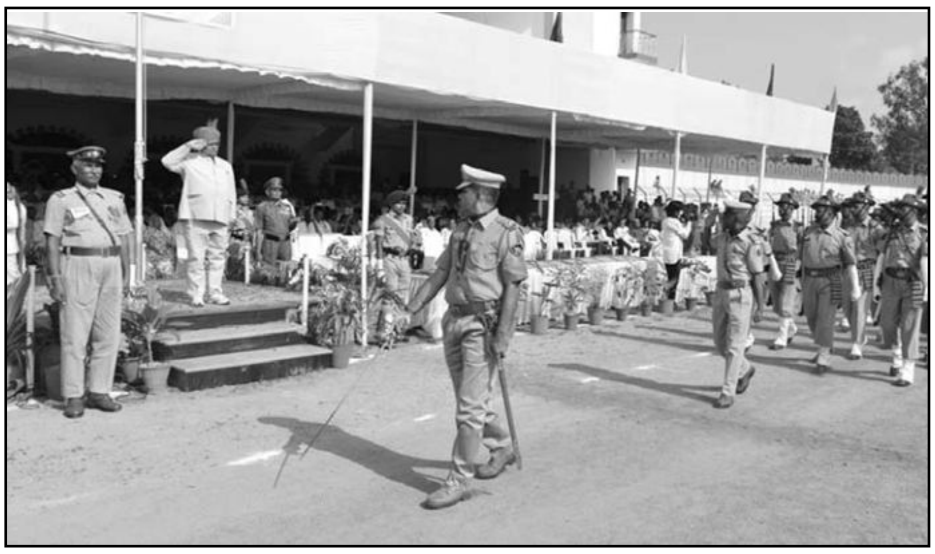

गृहमंत्री ने कहा कि उदयपुर क्षेत्र में विकास को ऐतिहासिक गति मिली है। इसके लिए सड़क विकास के लिए 6 हजार करोड़, रेलवे के लिए अहमदाबाद-उदयपुर आमान परिवर्तन के लिए दो वर्षों में 900 करोड़, उदयपुर-मावली-मारवाड़ आमान परिवर्तन के लिए 1500 करोड़ तथा बड़ीसादड़ी-नीमच के लिए 345 करोड़ के साथ ही अजमेर-उदयपुर रेलवे के विद्युतीकरण की महत्वपूर्ण सौगात मिली है। उदयपुर को अंतर्राष्ट्रीय हवाई सेवाओं की सौगात के तहत अक्टूबर से दुबई तक सीधी हवाई सेवा का भी लाभ मिलने जा रहा है। समारोह में स्वाधीनता सेनानी ललितमोहन शर्मा, अम्बालाल नन्दावत तथा स्मृतिशेष स्वाधीनता सेनानी नारायणदास खुराना एवं कन्हैयालाल की पत्नियों का अभिनंदन किया गया। राज्यपाल के संदेश का वाचन अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन सी. आर. देवासी ने किया।

समारोह में सांसद अर्जुनलाल मीणा, विधायक फूलसिंह मीणा, पूर्व मंत्री चुन्नीलाल गरासिया, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, उप महापौर लोकेश द्विवेदी, यूआईटी अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, संभागीय आयुक्त भवानीसिंह देथा, जिला कलक्टर विष्णुचरण मल्लिक, मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी, अतिरिक्त जिला कलक्टर ओ. पी. बुनकर, गिर्वा के उपखण्ड अधिकारी कमर चौधरी, एनसीसी के पी. एस. श्रीमाली सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग, सेना के वरिष्ठ अधिकारी, वरिष्ठ नागरिक, कॉलेज व विद्यालयों के छात्र-छात्राएं एनसीसी, स्काउट गाइड के सदस्य व विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद थे।

समारोह में गुरुनानक सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत मधुर संगीत की धुनों के बीच सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति दी। साथ ही मूक बधिर विद्यालय व डीपीएस स्कूल के विद्यार्थियों की व्यायाम प्रस्तुतियों ने भी दर्शकों को रोमांचित किया। कार्यक्रम का संयोजन आकाशवाणी के उद्घोषक राजेन्द्र सेन एवं रागिनी पानेरी ने किया।

अनगिनत देशभक्तों के अवदान से आजादी : पण्डवाल

हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय में मुख्य अतिथि कंपनी सेक्रेट्री राजेन्द्र पण्डवाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। उन्होंने कहा कि हजारों देशभक्तों के बलिदान, अथक प्रयास एवं अनवरत समर्पण से भारत आजाद हुआ। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान ज़िंक अपने व्यापार के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक कल्याण एवं ग्रामीण उत्थान तथा पर्यावरण, संरक्षण और सुरक्षा के प्रति सदैव कटिबद्ध है।

नव निर्माण के लिये युवाओं को आगे आना होगा : प्रो. सारंगदेवोत

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने माणिक्यलाल वर्मा श्रमजवी महाविद्यालय, प्रतापनगर स्थित विद्यापीठ के मुख्य प्रशासनिक भवन एवं डबोक परिसर में तिरंगा फहराया। मुख्य समारोह पंचायत यूनिट परिसर डबोक में हुआ। यहां प्रो. सारंगदेवोत ने ध्वजारोहण किया। अध्यक्षता कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर ने की।

इस अवसर पर ओसीडीसी के होम्योपेथिक कॉलेज, फिजियोथेरेपी कॉलेज, श्रीमन्नारायण, लोकमान्य तिलक कॉलेज के छात्र-छात्राओं को देश भक्ति गीतों व नृत्य पर अपनी आकर्षक प्रस्तुतिया दी। प्रो. सारंगदेवोत ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, अलगाववाद, महिला उत्पीड़न आदि को खत्म कर देश की एकता एवं अखण्डता हेतु युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। छात्र छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत तथा सामाजिक कुरीतियां छोड़ने की शपथ दिलाई।

अशोक लेलैण्ड ने पेश किया डिजिटल मार्केट प्लेस

उदयपुर। हिंदुजा ग्रुप की प्रमुख कम्पनी अशोक लेलैण्ड ने उद्योग जगत में पहली बार चार इनोवेटिव डिजिटल समाधानों का संयोजन-डिजिटल मार्केट प्लेस पेश किया है। ये समाधान ब्राण्ड के दर्शन 'आपकी जीत, हमारी जीत' को ध्यान में रखते हुए पेश किए गए हैं। अशोक लेलैण्ड के प्रबन्ध निदेशक विनोद के दासरी ने कहा कि इनमें देश के वाणिज्यिक वाहन कारोबार में बदलाव लाने की अपार क्षमता है। तेज़ी से विकसित होते स्मार्टफोन के इस दौर में इन डिजिटल समाधानों का इस्तेमाल करना बेहद आसान है।

ये सभी स्मार्टफोन्स के लिए कम्पेटिबल हैं और रोज़मर्रा में इस्तेमाल किए जाने वाले किसी भी अन्य ऐप की तरह काम में लिए जा सकते हैं। चार डिजिटल समाधान उपभोक्ताओं को अपने कारोबार का प्रबन्धन करने में मदद करेंगे, उनके लिए किसी भी स्थान से अपने कारोबार में लॉग ऑन करना आसान हो जाएगा और किसी भी समय वे अपने कारोबार की गतिविधियों का प्रबन्धन कर सकेंगे।

डिजिटल मार्केटप्लेस में चार ऐप्स शामिल हैं जिनमें आई-एलर्ट के द्वारा उपभोक्ता अपने वाहन को ट्रैक कर सकते हैं और वाहन के स्वास्थ्य के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी पा सकते हैं। सर्विस मंडी उपभोक्ताओं को पहले से निर्धारित दरों पर रेटेड, प्रशक्षित प्रणाली से जोड़ता है। ई-डायग्नॉस्टिक्स- मरम्मत के लिए तेज़ निदान एवं विज़ुअल दिशानिर्देशों को सुनिश्चित करता है। लेकार्ट- चौबीसों घण्टे असली स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता एवं उनकी उपभोक्ता के घर तक डिलीवरी को सुनिश्चित करता है।

अशोक लेलैण्ड हमेशा से इनोवेशन और तकनीक में सबसे आगे रहा है। 'आपकी जीत, हमारी जीत' की अवधारणा के साथ हम हमेशा से उद्योग जगत में सबसे पहले इनोवेशन्स लाते रहें हैं और इसी के चलते उपभोक्ताओं का भरोसा और सम्मान जीतने में कामयाब रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार इस पहल से अगले तीन सालों में 1000 करोड़ रु की कमाई होगी।

जूमकार ने लांच किया एचओपी

उदयपुर। भारत की 100 प्रतिशत सेल्फ ड्राइव कार रेंटल कम्पनी जूमकार ने एचओपी लांच करने की घोषणा की है। यह एकतरफा इंटरसिटी सेल्फ ड्राइव सेवा है। इस वन वे सेगमेंट के साथ ही जूमकार ने भारत के कार रेंटिंग क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम कर लिया है। यह नई वन वे इंटरसिटी सेल्फ सर्विस ग्राहक बिंदु ए से बिन्दू बी तक सफर के लिए ग्राहक जूमकार के किसी भी स्थान से कार ले सकता है और उसे अपने गंतव्य के जूमकार लोकेशन पर रख सकता है। वन वे इंटरसिटी लांच में काफी लचीलापन दिया गया है और लोगों को अपने ट्रैवल प्लान के अनुरूप विकल्प भी दिए गए हैं।

जूमकार के सीईओ और सह संस्थापक गेग्र मोरेन ने कहा कि झूम कार एचओपी सेवाओं के लिए नए इनोवेशंन्स पेश कर रही है जो कि देश के 24 शहरों में उपलब्ध होंगे जिनमें अन्तर राज्य एवं अन्तत: अंतर राज्यीय मार्ग के साथ ही 24 शहरों के मार्ग इस प्रकार होंगे बंगलूरू-मैसूर, बंगलूरू-मंगलोर, मंगलोर-मैसूर, मुम्बई-पुणे, अहमदाबाद-सूरत, कोलकाता-सिलीगुड़ी, चेन्नई कोयम्बटूर, विजयवाड़ा-वैजाग। जूमकार ऐसे व्यक्तियों को शामिल करना चाहती है जो कारोबारी और सैर दोनों की दृष्टि से सेल्फ ड्राइव करना चाहते हों। उन्होंने कहा कि वन वे, इंटर सिटी सेल्फ ड्राइव रेन्टल प्रोडेक्ट, एचओपी जैसी लीक से हट कर सेवाएं लांच करने के साथ ही हम अपने 20 लाख से भी अधिक जूमकार ग्राहक आधार को एक नए स्तर की सुविधा प्रदान करने जा रहे हैं। ग्राहकों के साथ ध्यानपूर्वक अध्ययन तथा अनगिनत विचार-विमर्शों के बाद हमने इस उत्पाद को तैयार किया है जो कि पॉइंट टू पॉइंट, इंटरसिटी, सेल्फ ड्राइव जैसे अनुभव प्रदान करता है।

उत्पादन क्षमता में होगा विस्तार

उदयपुर। बिड़ला कॉरपोरेशन लि. (बिड़ला कॉर्प) अगले पांच वर्ष में अपनी सीमेंट उत्पादन क्षमता को मौजूदा 1.55 करोड़ टन सालाना से बढ़ाकर 2 करोड़ टन करने की योजना बना रही है। इसी क्रम में कम्पनी यवतमाल जिले के मुकुटबन में सालाना 40 लाख टन क्षमता का एक संयंत्र लगाने की तैयारी कर रही है। कम्पनी इस परियोजना पर 2,400 करोड़ रुपये का निवेश करेगी।

कम्पनी के चेयरमैन हर्ष वी लोढ़ा ने कहा कि इसे कई चरणों में तैयार किया जाएगा और इसका वित्त पोषण आंतरिक संसाधनों एवं ऋण के जरिये किया जाएगा। देश के पश्चिम-मध्य भाग में उत्पादन बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। इन क्षेत्रों से सीमेंट की कहीं अधिक मांग आने की उम्मीद है। फिलहाल पूर्वी क्षेत्र में सीमेंट की सबसे अधिक मांग दिख रही है। बिड़ला कॉर्प की नजर मध्य क्षेत्र पर है जिसका दायरा पूर्वी महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तरप्रदेश तक विस्तृत है।

उन्होंने कहा कि सरकार ने वार्षिक आम बजट में आवास क्षेत्र के लिए आवंटित रकम को 38 फीसदी बढ़ाकर 23,000 करोड़ रुपये, सड़क क्षेत्र के लिए आवंटित रकम को 23 फीसदी बढ़ाकर 64,900 करोड़ रुपये कर दिया है। इस प्रकार आवास और सड़क क्षेत्र में सरकारी खर्च बढ़ने से सीमेंट की खपत में भी वृद्धि होने की उम्मीद है।

आटिज्म विकार के लिए स्टेम सेल थेरेपी उपचार की एक नई आशा

उदयपुर। न्यूरोजेन ब्रेन एण्ड स्पाइन इंस्टीट्यूट, जो कि भारत का पहला और एकमात्र स्टेम सेल थेरेपी केंद्र है, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसॉर्डर से पीड़ित बच्चों के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। न्यूरोजेन अब तक दुनिया भर के करीब 1000 से अधिक ऑटिस्टिक बच्चों के इलाज की पेशकश कर चुका है।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसॉर्डर (एएसडी) बचपन में होनेवाले आम न्यूरो-मानसिक विकारों में से एक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में 68 बच्चों में 1 बच्चे को ऑटिज्म की समस्या है, तो वहीं भारत में हर 250 बच्चों में से 1 बच्चा ऑटिज्म की चपेट में है, हालांकि बेहतर निदान के साधनों और लोगों के बीच विकार को लेकर बढ़ी जागरूकता के चलते यह संख्या बढ़ती जा रही है।

प्रेसवार्ता में एलटीएमजी अस्पताल और एलटीएम मेडिकल कॉलेज, सायन, मुंबई के प्रोफेसर एवं न्यूरोसर्जरी के प्रमुख और न्यूरोजेन ब्रेन एण्ड स्पाइन इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. आलोक शर्मा ने बताया कि बच्चे का ऑटिज्म पीड़ित होना अधिकांश माता-पिता के लिए जीवन को बदलने वाला अनुभव होता है।

ऑटिस्टिक लक्षणों वाले ऑटिज्म ग्रस्त बच्चे की परवरिश अभिभावकों के लिए, खासकर माताओं के लिए एक चुनौती की तरह होता है क्योंकि यह थकाऊ, लंबी और अकेले रोलर कोस्टर की सवारी करने जैसी प्रक्रिया है। ऑटिज्म बचपन का एक विकार है जो बोलने में दिक्कत, अतिसक्रियता, आक्रामक व्यवहार और सामाजिक संपर्क में कठिनाई के परिणाम प्रकट करता है। वर्तमान में भारत में तकरीबन एक करोड़ बच्चे इससे प्रभावित हैं, जिनका दवाओं के सहारे, लाक्षिणक राहत, विशेष शिक्षा, ऑक्युपेशनल स्पीच और बिहैवियरल थेरेपी के साथ इलाज किया जा रहा है।

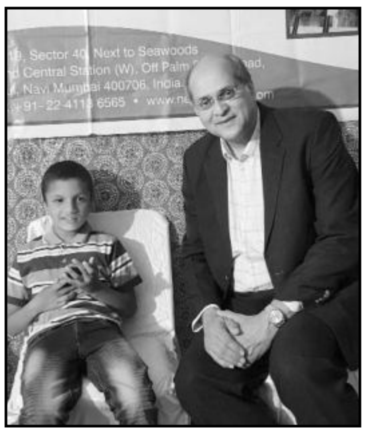

डॉ आलोक शर्मा ने बताया कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति के विकास पर एक नजर डालने से पता चलता है कि मुश्किल लाइलाज बीमारियों का समाधान अक्सर मल्टी-डिसिप्लीनरी अप्रोच से मिलता है। यह तभी होता है जब लाइलाज या उपचार के लिहाज से मुश्किल विकारों के मामलों में अलग-अलग विशेषताओं के लोग अपने ज्ञान, कौशल और संसाधनों का संयुक्त प्रयोग करते हैं।

उन्होंने बताया कि ऑटिज्म उच्च मानसिक कार्यों में दोष का कारण बनता है और बच्चों को अतिसक्रिय, आक्रामक बनाता है और उनके सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है। बोलचाल, भाषा और संचार कौशल को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। ऐसे बच्चे सामान्य स्कूलों में नहीं जा पाते हैं और अपनी दैनिक गतिविधियों के लिए माता-पिता या देखभाल करनेवालों पर पूरी तरह निर्भर रहते हैं। बच्चे का ऑटिज्म से पीड़ित होना समग्र परिवार को भावनात्मक, सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभावित करता है।

यह सामान्यत: लड़कियों के मुकाबले लड़कों में अधिक पाया जाता है। हालांकि सामान्य तौर पर तीन वर्ष की उम्र में बच्चों में इसके लक्षण स्पष्ट होने लगते हैं, लेकिन कुछ मामलों में यह काफी बड़ी उम्र के बाद उभरता है। इस विकार की ईटियोलॉजी (सटीक कारण) और पैथोफिजिओलॉजी के बारे में बेहद अनभिज्ञता है, लेकिन अनुसंधानों ने इसके लिए जेनेटिक्स (आनुवांशिकता), चयापचय या न्यूरोलॉजिकल कारकों, कुछ विशेष पकार के संक्रमणों जन्म के पूर्व या पसवोत्तर पर्यावरण आदि की ओर इशारा किया है।

प्रेसवार्ता में उदयपुर के 7 वर्षीय लड़के मास्टर अदनान तबरान की केस रिपोर्ट पेश की गई जो कि अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिव डिसऑर्डर (ऑटिज्म) का मामला है। अदनान की मां की गर्भावस्था के 9 वें महीने के दौरान जटिलताओं की वजह प्रेरित प्रसव तकनीक के सहारे निर्धारित तिथि से 8 से 10 दिन पूर्व अदनान का जन्म हुआ। वह जन्म लेने के तुरंत बाद रोया और उसके बाद भी किसी तरह की जटिलता के लक्षण नजर नहीं आए।

इमेजिन -एपल के प्रीमियम रिसेलर स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर। इमेजिन ने अपने एपल प्रीमियम रिसेलर स्टोर का सेलिब्रेशन

मॉल में शुभारंभ किया। इसका उद्घाटन लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में ट्रेसर सिस्टम्स प्रा. लि. के प्रबन्ध निदेशक शौर्य सेठ ने कहा कि राजस्थान में यह हमारा छठा बिक्री केन्द्र है। हमारा प्रमुख ध्येय ग्राहकों के अनुभवों पर आधारित है जो कि उपलब्धता, सेवा, विश्वसनीयता और वहनीयता के माध्यम से संचालित किया जाता है। उल्लेखनीय सेवाओं और अद्‌भुत स्थान पर यह स्टोर पूरे वर्ष भर खुला रहेगा। हमारा मानना है, कि यह स्टोर उदयपुर के नागरिकों और आस-पास के इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए एक पंसदीदा हाईटेक स्थान साबित होगा।

ट्रेसर सिस्टम्स प्रा. लि. के रीजनल मैनेजर राजस्थान मनोज पालीवाल ने कहा कि इमेजिन में एपल उत्पादों और थर्ड पार्टी एसेसरीज की विशद श्रृंखला उपलब्ध होगी। इस स्टोर पर एसेसरीज को वर्गीकृत रूप से प्रदर्शित किया गया है ताकि खरीदारों को अपनी पंसद का उत्पाद लेने में मदद मिल सके। ग्राहक मैकबुक स्लीव या आईपैड केस, नवीनतम मैक एसेसरीज अथवा नवीनतम म्यूजिक एसेसरीज की तलाश में है, तो इस स्टोर में मैकबुक स्लीव या आईपैड केस, नवीनतम मैक एसेसरीज अथवा नवीनतम म्यूजिक एसेसरीज सभी भारी मात्रा में उपलब्ध होंगी। इस स्टोर में एपल के डेस्कटॉप कम्प्यूटर्स, लैपटॉप्स, मोबाइल्स और आईपैड, आईपॉड तथा बीट्स की पूरी रेंज उपलब्ध होंगी।

उन्होंने बताया कि इमेजिन स्टोर पर प्रशिक्षित स्टाफनियुक्त किया गया है, जो कि एपल के सर्वश्रेष्ठ उत्पाद एवं एसेसरीज को खरीदने में मार्गदर्शन देगा। उन्होंने कहा कि ट्रेसर में हमारा यही प्रयास होगा ग्राहकों को यथासंभव सेवाएं इस इमेजिन स्टोर पर उपलब्ध हो और वे यहां से अच्छा अनुभव लेकर जाए। इसके लिए हमने ग्राहकों की सेवा में यहां नॉलेजेबल सेल्स कर्मी उपलब्ध रहेंगे जो ग्राहकों की एपल के सभी नवीनतम उत्पादों के बारे में जानकारी दे सकें। स्टोर में आने वाले आगंतुकों को सभी उत्पादों का टेस्ट ड्राइव का अवसर दिया जाएगा। हमारा प्रयास होगा कि लोगों को इन उत्पादों को संचालित करने का पूरा प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, ताकि लोग मैक की शक्ति को समझ सकें और इसका अपने-अपने क्षेत्र में इस्तेमाल कर सकें।

लोगों की वहनीयता को बढ़ाने के क्रम में इमेजिन ने ईएमआई और बायबैक योजनाएं भी शुरू की है, ताकि खरीदारों को आसान मासिक किस्तों पर उत्पाद खरीदने की सुविधा मिल सके। किस्त योजना तीन माह से लेकर दो वर्ष की अवधि के लिए होगी। यह योजनाएं ग्राहकों की वहनीयता को बढ़ाने के लिए लांच की जा रही हैं। इमेजिन द्वारा की गई लांच सेरेमनी में ग्राहकों के लिए अनेक प्रकार की ऑफर्स रखी गई। ग्राहकों को कुछ मुफ्त उपहार भी दिये गये। इस स्टोर पर ग्राहकों की देर शाम तक भीड़ रही। इमैजिन की योजना छात्र समुदाय के लिए भी ऑफर्स की योजना है।

लांच के अवसर पर आए एक छात्र का कहना था कि इस स्टोर की शानदार सजावट काफी बेहतरीन है। मैं इसकी उत्पाद रेंज को काफी पसंद करता हूं

SAI TIRUPATI UNIVERSITY

(Established by the Rajasthan State Legislative Assembly and as per Sec. 2(F) of UGC Act. 1956)

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा

अम्बुआ रोड, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर (राज.)

+91-294-2980077, +91-9587890122, +91-8696440666

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत इलाज प्रारम्भ

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत इलाज प्रारम्भ हो गया है। पीआईएमएस हॉस्पिटल के चेयरमैन श्री आशीष अग्रवाल ने बताया कि आर.बी.एस.के. के अंतर्गत 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की विभिन्न प्रकार की गंभीर व जन्मजात बीमारियों का इलाज प्रारम्भ कर दिया गया है। इस योजना में आँख, कान, कटे, तालु, जन्मजात स्पाइनल आदि बीमारियों के ऑपरेशन किए जाएंगे साथ ही योजना में हड्डी के विशेष तथा हृदय के ऑपरेशन भी संभव होंगे।

कॉर्निया (नेत्र) ट्रांसप्लांट की सुविधा शुरु हो गयी है

पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल में कॉर्निया (नेत्र) ट्रांसप्लांट की सुविधा शुरू हो गयी है। भारत में कॉर्निया अंधता मरीजो की संख्या काफी ज्यादा हैं। जो व्यक्ति मरनोपरांत नेत्रदान करते है उनका कॉर्निया (नेत्र की पुतली) उन मरीजो मे लगाया जाता है, जिनका कॉर्निया चोट या संक्रमण के कारण खराब हो गया हो लेकिन आँख का रेटिना (पर्दा) स्वस्थ है। पीआईएमएस में कॉर्निया आइ बैंक सोसाइटी ऑफ राजस्थान, जयपुर से मंगवाया जाता है। तथा तुरंत ही कॉर्निया ट्रांसप्लांट किया जाता है। अभी तक 2 मरीजों का कॉर्निया ट्रांसप्लांट हो चुका है।

केटेरेक्ट या मोतियाबिंद (Cataract), कन्जेनिटल मोतियाबिंद (Congenital cataract), व भेंगापन (Squint) राष्ट्रीय अंधता नियंत्रण कार्यक्रम (National Programme of Control of Blindness) के अंतर्गत उमरड़ा स्थित पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस में मोतियाबिंद का नि:शुल्क ऑपरेशन किया जाता है।

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, पंजीयन संख्या - **RAJHIN/2016/72902,** Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।